पलंग पर पड़े पड़े अब पसलियां भी कराहने लग पड़ी थीं| वहीँ सामने अलमारी के दरवाज़े पर एक मित्र का दिया हुआ पोस्टर कहता है ‘सफलता उन्ही की, जो आरम्भ कर पाएँ’| मन में ख़याल आया, समय बीता जा रहा है, उठने का एक जतन और करें|

पर्दा हटाने पर मालूम पड़ता है की आज तो सूरज चाचू भी मेरी तरह मुलायम रूइनुमा बादलों की रजाई ओढ़े सो रहे हैं | या शायद अपनी रौशनी को साथ लिए बादलों के पीछे कहीं प्रभात भ्रमण पर निकले हैं, और एक मैं हूँ जो इस गरम रजाई में ककून बनाये लेटा हुआ हूँ |

समय सारिणी के अनुसार तो इस समय वे अपनी मध्य कक्षा में होने चाहिए थे, परन्तु मुझे नहीं दिख रहे कहीं अपने सूरज चाचू ! कहीं बादलों के पीछे से क्षण भर के लिए कोई रोशनी सी निकाल कर ऐलान करती है कि ‘आये हैं, तुम्हारे सूरज चाचू आये हैं’| कहाँ? झूठ? आज तो उनकी भी ‘प्रोक्सी’ पकड़ी गयी | अब बताइए क्या सज़ा दें? अनुपस्थिति का कारण भी क्या देंगे? यातायात के साधन उपलब्ध नहीं थे? बादलों के दरमियाँ ‘ट्रेफिक जाम’ में फस गए? सात घोड़ों वाला रथ ऐसे ही दिया है क्या? ‘होर्सेपावर’ नाम की भी कोई चीज़ है की नहीं?

क्या फैसला सुनाया जाए, इसी बात पर मैं और मेरा मन विचार विमर्श कर ही रहे थे कि अचानक दरवाज़े पर दस्तक हुई | सहसा ठिठक उठा, ‘सूरज चाचू दरवाज़े से तो आ नहीं सकते, और वो भी दस्तक के साथ? अभी तो फैसला सुनाया भी नहीं है’ | कौन हो सकता है? उठ कर दरवाज़ा खोला तो बिस्तर की गर्मी खो बैठूँगा, और न खोला तो न जाने कौन सा सुसंयोग हाथ से निकल जाए| पर रजाई भी तो हाथ से निकल जायेगी| अजीब कशमकश है| मैं एक बार और खिडकी से आकाश की ओर ताकने लगा|

कितना समय बीता होगा उस पल को बीते हुए, जब वह खटखटाहट हुई थी? मुझे सोया हुआ सोच कर शायद चला गया होगा, जो भी था | अभी ध्यान मुकद्दमे पर लाने ही लगा था कि सहसा एक बार और, दरावाज़े पर आहात हुई| अब कुछ व्याकुलता बढ़ी | मोबाईल उठा कर देखा कि कहीं मेरी कक्षा से कोई सूचना न आई हो, जिसका दूसरा दूत दरवाजे पर प्रतीक्षा में खड़ा हो| कहीं मेरी भी तो...?

नहीं नहीं, मैंने किसी को कहा तो नहीं था| पर यहाँ यारी कुछ सज्जन लोगों से हुई है| दोस्ती निभाते हैं, चाहे कक्षा रुपी ग्रहण हो, या परीक्षा की अमावस, जुगनुओं की भांति उजाला बिखेरते रहते हैं| व्याकुलता कुछ और बढ़ी, मन में आया के एक दफा आवाज़ लगा के पूछ ही लेते हैं के कौन है जो इस समय कबाब में हड्डी बनने आया है, पूछ लूँ के क्या काम है, कह दूं के बाद में आना| शायद कोई दोस्त कक्षा में अनुपस्थित देख खैरियत पूछने आया हो, कह दूं के सब ठीक है| पर क्या हो अगर बुरा समाचार सुनाने ही आया हो? क्या पता, आज किस मित्र का मेरे प्रति स्नेह अध्यापक महोदय को भी ज्ञात हो गया हो? कहीं आज मेरी भी प्रोक्सी पकड़ी गयी हो|

अब नयी मुसीबत आन पड़ी, कहाँ मुकद्दमे में न्यायाधीश बने अपना दंडादेश सुनाने वाले थे, और कहाँ अब आप ही किसी और के दंडादेश के भागी बन बैठे|

समक्ष खड़ी परिस्थिति को देख चेहरे और कानों में खून तेज़ी से दौड़ने लगा और गर्माहट लाने लगा| रजाई की गर्माहट का एहसास हालात की स्तभ्ता से मुझे उभारने लगा और दिमाग ने तर्क देकर सहमे हुए मन को फुसलाना शुरू किया | ‘मोबाइल इन्बोक्स’ खाली है, दरवाजे के उस ओर जो भी है, उसने आवाज नहीं लगायी है, छात्रावास में भी चुप्पी सी है, मतलब अभी कोई वापिस लौट कर नहीं आया होगा| अतः दरवाजे पर जो कोई भी है, वह भी मेरी ही तरह आज यहाँ छात्रावास में अपनी उपस्थिति दे रहा है| शायद कुछ मांगने आया होगा, ‘प्रैक्टिकल फाइल’, या शायद नहाने की बाल्टी|

अब जान में कुछ जान आई| मस्तिष्क और तेज़ी से सोचने लगा| जल्दी ही निर्णय हो आया| न दरवाज़ा खुलेगा, और न ही आवाज़ लगेगी| ‘प्रोक्सी’ पकड़ी भी गयी हो तो क्या, जब तक यह दरवाजा बंद है, तब तक कोई भी बुरी खबर प्रवेश नहीं कर सकती| आज की सुबह मेरी है, और कोई भी फिक्र उसको मुझ से छीन नहीं सकेगी| एक फैसला पारित हुआ, और यह केस यहीं पर बंद|

अब तक मन भी थोडा बदल गया था, बादल भी कुछ घनेरे होते से जान पड़े| चाचू पर थोड़ी दया आई, शायद मन का वह भ्रम ही उनका मुकद्दमा लड़ने आया था|

फैसला हुआ, अगली बार ऐसी लापरवाही न करने की चेतावनी मिली, सूरज चाचू बाइज्ज़त बरी हुए, और मैं एक बार और रजाई के अंदर सुकून से सो गया||